॥ श्री महालक्ष्मी अष्टक ॥

महालक्ष्मी अष्टकम देवराज [इन्द्र](#) द्वारा रचित माता लक्ष्मी को समर्पित एक स्तोत्र है, इसका उल्लेख पद्म पुराण में हुआ है। इस स्तोत्र के नियमित पाठ से साधक महालक्ष्मी की कृपा से धन-धान्य संपन्न हो जाता है, उसके महान पातकों और शत्रुओं का नाश हो जाता है।

**नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥1 ॥**

अर्थ – श्रीपीठ पर स्थित और देवताओं से पूजित होनेवाली हे महामाये ! तुम्हें नमस्कार है। हाथ में शंख, चक्र और गदा धारण करनेवाली हे महालक्ष्मी ! तुम्हें प्रणाम है।

**नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि ।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥2 ॥**

अर्थ – गरुड़ पर आरूढ़ हो कोलासुर को भय देने वाली और समस्त पापों को हरने वाली हे भगवति महालक्ष्मी ! तुम्हें प्रणाम है।

**सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥3 ॥**

अर्थ – सब कुछ जानने वाली, सबको वर देने वाली, समस्त दुष्टों को भय देने वाली और सबके दुःखों को दूर करने वाली हे देवि महालक्ष्मी ! तुम्हें नमस्कार है।

**सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि ।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥4 ॥**

अर्थ – सिद्धि, बुद्धि, भोग और मोक्ष देने वाली हे मन्त्रमूर्तिमय भगवति महालक्ष्मी ! तुम्हें सदा प्रणाम है।

**आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि ।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥5 ॥**

अर्थ – हे देवि ! हे आदि-अंतरहित आदिशक्ते ! हे महेश्वरि ! हे योग से प्रकट हुई भगवति महालक्ष्मी ! तुम्हें नमस्कार है ।

**स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्तिमहोदरे ।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥6 ॥**

अर्थ – हे देवि ! तुम स्थूल, सूक्ष्म एवं महारौद्ररूपिणी हो, महाशक्ति हो, महोदरा हो और बड़े-बड़े पापों का नाश करने वाली हो । हे देवि महालक्ष्मी ! तुम्हें नमस्कार है ।

**पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातः महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥7 ॥**

अर्थ – हे कमल के आसन पर विराजमान परब्रह्म स्वरूपिणी देवि ! हे परमेश्वरि ! हे जगदम्ब ! हे महालक्ष्मी ! तुम्हें मेरा प्रणाम है ।

**श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातः महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥8 ॥**

अर्थ – हे देवि ! तुम श्वेत वस्त्र धारण करने वाली और नाना प्रकार के आभूषणों से विभूषिता हो । सम्पूर्ण जगत में व्याप्त एवं अखिल लोक को जन्म देने वाली हो । हे महालक्ष्मी ! तुम्हें मेरा प्रणाम है ।

महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्धक्तिमान्नरः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥9 ॥

अर्थ – जो मनुष्य भक्तियुक्त होकर इस महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्र का सदा पाठ करता है, वह सारी सिद्धियों और राज्य वैभव को प्राप्त कर सकता है ।

एककाले पठेत्रित्यं महापापविनाशनम् ।
द्विकालं यः पठेत्रित्यं धनधान्यसमन्वितः ॥10 ॥

अर्थ – जो प्रतिदिन एक समय पाठ करता है, उसके बड़े-बड़े पापों का नाश हो जाता है। जो प्रतिदिन दो समय पाठ करता है, वह धन-धान्य से संपन्न होता है।

त्रिकालं यः पठेत्रित्यं महाशत्रुविनाशनम् ।
महालक्ष्मीर्भवेत्रित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥11 ॥

अर्थ – जो प्रतिदिन तीनों कालों में पाठ करता है, उसके महान शत्रुओं का नाश हो जाता है और उसके ऊपर कल्याणकारिणी वरदायिनी महालक्ष्मी सदा ही प्रसन्न होती हैं।

॥ इस प्रकार इन्द्रकृत महालक्ष्मी अष्टकम् (महालक्ष्म्यष्टक) सम्पूर्ण हुआ ॥

विधि – श्री महालक्ष्मी अष्टक स्तोत्र का नित्य 11 पाठ तीनों समय करना चाहिए ! इस स्तोत्र को शरद पूर्णिमा अथवा दीपावली अथवा चन्द्र ग्रहण की रात्री में 108 पाठ करके सिद्ध कर लें !

नवरात्रि में नौ दिन तक प्रतिदिन 108 पाठ करें तो भी यह स्तोत्र सिद्ध हो जाता है ! इसके अतिरिक्त किसी भी शुक्रवार से यह अनुष्ठान आरम्भ कर सकते हैं ! अनुष्ठान 21 दिन अथवा ४१ दिन का करें !

इस अनुष्ठान को पूर्ण करने पर आर्थिक समस्याओं से साधक मुक्त हो जाता है ! उसके कार्य सरलता से पूर्ण होने लगते हैं ! जीवन की विघ्न बाधाएं नष्ट होती हैं ! यदि कोई धन हड़प लिया है अथवा चोरी किया है , तब भी उसकी पुनः प्राप्ति के लिए इस स्तोत्र का 21 दिवसीय अनुष्ठान कर सकते हैं !

इस अष्टक को संस्कृत , हिंदी अथवा अंग्रेजी में भी पढ़ सकते हैं ! फल सभी का समान ही है !

श्रद्धेय स्वामी रुपेश्वरानंद जी महाराज

- स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम , बलुआ घाट, जिला- चंदौली (काशी क्षेत्र),
उत्तर प्रदेश (भारत)

Mo.No.+91- 7607233230,

E-mail – swamirupeshwar@gmail.com

- अधिक जानकारी के लिए देखें : <http://swamirupeshwaranand.in/>